

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 9: मार्कण्डेय के दर्शन

14 September 2026



प्रलय के एकमात्र महासागर पर एकाकी बहते हुए, ऋषि मार्कण्डेय परम भगवान् को एक वटपत्र पर विराजमान देदीप्यमान शिशु के रूप में देखते हैं — सम्पूर्ण विश्व उस नहीं, ज्योतिर्मय आकृति के भीतर सुरक्षित।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में भगवान् ऋषि मार्कण्डेय के समक्ष नर तथा नारायण के रूप में प्रकट हुए, उनकी दीर्घ तपस्या तथा शुद्ध भक्ति से द्रवित होकर। यह नवम अध्याय बताता है कि मार्कण्डेय ने क्या माँगा, और उन्हें क्या दिखाया गया। कोई भी वर पाने पर, ऋषि ने धन या मोक्ष तक नहीं माँगा; उन्होंने केवल भगवान् की माया देखने की याचना की — वह रहस्यमय शक्ति जिससे एक ही सत्ता यह विविध जगत् प्रतीत होती है। तब जो घटित होता है वह समस्त शास्त्र के सर्वाधिक असाधारण दर्शनों में से एक है: एक प्रलय-जल जिसमें मार्कण्डेय युगों तक नितान्त एकाकी बहते हैं, और फिर परम भगवान् का एक वटपत्र पर विराजमान अद्भुत शिशु के रूप में दर्शन, जिसकी देह में ऋषि सम्पूर्ण विश्व देखते हैं। यह अध्याय शौनक के पूर्व-प्रश्न का उत्तर देता है और हमें अविस्मरणीय रूप से दिखाता है कि माया क्या है और उसे कौन धारण करता है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 9 (नवम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: मार्कण्डेय भगवान् की माया के दर्शन करते हैं
- मुख्य वक्ता: सूत गोस्वामी, नैमिषारण्य के ऋषियों को कथा सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: नैमिषारण्य के ऋषिगण, शौनक के नेतृत्व में
- मुख्य स्थान: पुष्पभद्रा नदी के तट पर मार्कण्डेय का आश्रम; तथा दर्शन के भीतर प्रलय का एकमात्र महासागर
- मुख्य विषय-वस्तु: भगवान् की माया देखने की मार्कण्डेय की याचना, प्रलय-जल, तथा वटपत्र पर शिशु-रूप में भगवान् के दर्शन
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 9, श्लोक 1-34
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

एक असाधारण वर

प्रतिभाशाली ऋषि द्वारा विधिवत् स्तुत होकर, नर सहित भगवान् नारायण अत्यन्त प्रसन्न हुए और भृगुओं में रत्न उस ऋषि से बोले। “तुमने पूर्णता प्राप्त कर ली है,” उन्होंने कहा, “मन की एकाग्रता, मेरी अखण्ड भक्ति, तथा तप, स्वाध्याय एवं संयम से। तुम्हारे आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत से हम अत्यन्त प्रसन्न हैं। मुझसे अपना अभीष्ट वर ग्रहण करो।”

ऋषि का उत्तर ही अध्याय का मर्म है। वे निवेदन करते हैं कि इस प्रत्यक्ष दर्शन-मात्र से ही भगवान् का अपना उन्नत स्वरूप उन्हें प्रकट हो चुका है — इससे बड़े वर की वे कल्पना भी नहीं कर सकते, क्योंकि ब्रह्मा तथा अन्य देव भी दीर्घ योग से भगवान् के चरणकमलों का केवल एक आन्तरिक झलक पाते हैं, जबकि यहाँ भगवान् स्वयं उनकी इन्द्रियों के गोचर हो आए हैं। फिर भी, वे कहते हैं, एक वस्तु वे अवश्य माँगेगे।

अथाप्यम्बुजपत्राक्ष पुण्यश्लोकशिखामणे ।

द्रक्ष्ये मायां यया लोकः सपालो वेद सद्भिदाम् ॥ ६ ॥

athāpy ambuja-patrākṣa puṇya-śloka-śikhāmaṇe drakṣye māyāṁ yayā lokaḥ sa-pālo veda sad-bhidām

अर्थ: तथापि, हे कमलनयन प्रभो, हे यशस्वियों के शिरोमणि, मैं आपकी उस माया को देखना चाहता हूँ, जिसके प्रभाव से लोक, अपने अधिष्ठाता देवों सहित, एक ही सत्ता में विविधता का अनुभव करता है। (स्कन्ध 12, अध्याय 9, श्लोक 6)



कोई भी वर पाने पर, मार्कण्डेय धन या मोक्ष नहीं, अपितु केवल भगवान् की माया देखने की याचना करते हैं — वह शक्ति जिससे एक ही सत्ता यह विविध जगत् प्रतीत होती है (श्लोक 6)।

स्तुत तथा पूजित होकर, भगवान् ने कहा, “ऐसा ही हो!” और मुस्कराते हुए बदरिकाश्रम को लौट गए। वचन-प्राप्त उस दर्शन का निरन्तर चिन्तन करते तथा अपने आश्रम में रहते हुए, मार्कण्डेय अग्नि, सूर्य, चन्द्र, जल, पृथ्वी, वायु, आकाश तथा अपनी आत्मा में — सर्वत्र — श्रीहरि को देखते और मन से कल्पित सामग्री से उनकी पूजा करते, कभी-कभी भावावेश में बाह्य पूजा ही भूल जाते।

प्रलय

एक दिन सन्ध्या-समय, जब ऋषि पुष्पभद्रा के तट पर भगवान् की उपासना कर रहे थे, तभी एक प्रचण्ड पवन उठा। उसके पीछे विद्युत् से चमकते भयंकर मेघ आए और रथ-अक्ष-सी मोटी वर्षा बरसाने लगे। चारों दिशाओं के महासागर भयानक भँवरों, मगरों तथा गर्जना सहित प्रकट हुए, चारों ओर से पृथ्वी को निगलते हुए। सम्पूर्ण विश्व — पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग तथा ज्योतियों के समूह — जलमग्न हो गया, और महान् ऋषि, एकमात्र जीवित प्राणी, अन्धे तथा असहाय जीव-से बहते रहे, उनकी जटाएँ लहरों पर लहराती रहीं।

भूख-प्यास से पीड़ित, जल-जन्तुओं से आक्रान्त, आँधी तथा लहरों से आहत, अनन्त अन्धकार में घिरे, वे न दिशाएँ पहचान पाते, न आकाश, न पृथ्वी। कभी शोक में गिरते, कभी मोह में; कभी दुःख, कभी हर्ष; कभी भय, कभी स्वयं मृत्यु का अनुभव। करोड़ों-करोड़ों वर्ष बीत गए जब वे बहते रहे, उनकी बुद्धि भगवान् विष्णु की मोहिनी शक्ति से आच्छन्न थी।

अयुतायुतवर्षाणां सहस्राणि शतानि च ।

व्यतीयुभ्रमतस्तस्मिन् विष्णुमायावृतात्मनः ॥ १९ ॥

ayutāyuta-varṣāṇāṃ sahasrāṇi śatāni ca vyatīyur bhramatas tasmīn viṣṇu-māyāvṛtātmanah

अर्थ: असंख्य सहस्रों तथा शतों दस-हजार वर्ष बीत गए जब वे वहाँ बहते रहे, उनकी आत्मा विष्णु की माया से आच्छन्न थी। (स्कन्ध 12, अध्याय 9, श्लोक 19)



सम्पूर्ण विश्व प्रलय के महासागर में जलमग्न है, और मार्कण्डेय — एकमात्र जीवित प्राणी — विष्णु की माया से आच्छन्न, युगों तक एकाकी बहते हैं (श्लोक 19)।

वटपत्र पर शिशु

उस प्रलय में लोटते-लोटते, ऋषि ने अन्ततः पृथ्वी के एक उभार पर पत्तों तथा फलों से युक्त एक तरुण वटवृक्ष देखा। ईशान कोण की एक शाखा पर, एक खोखले पत्ते में एक शिशु लेटा था, अपने तेज से अन्धकार को निगलता हुआ। मार्कण्डेय उस दृश्य से विस्मित रह गए।

महामरकतश्यामं श्रीमद्वदनपङ्कजम् ।

कम्बुग्रीवं महोरस्कं सुनसं सुन्दरभ्रुवम् ॥ २२ ॥

श्वसैजदलकाभातं कम्बुश्रीकर्णदाडिमम् ।

विद्रुमाधरभासेषच्छोणायितसुधास्मितम् ॥ २३ ॥

पद्मगर्भारुणापाङ्गं हृद्यहासावलोकनम् ।

श्वसैजद्वलिसंविग्ननिम्ननाभिदलोदरम् ॥ २४ ॥

चार्वङ्गुलिभ्यां पाणिभ्यामुन्नीय चरणाम्बुजम् ।

मुखे निधाय विप्रेन्द्रो धयन्तं वीक्ष्य विस्मितः ॥ २५ ॥

*mahā-marakata-śyāmaṁ śrīmad-vadana-paṅkajam kambu-grīvaṁ mahoraskam su-nasaṁ
sundara-bhruvam śvāsaijad-alakābhātaṁ kambu-śrī-karṇa-dāḍimam vidrumādhara-bhāseṣa-
choṇāyita-sudhā-smitam padma-garbhāruṇāpāṅgaṁ hṛdya-hāsāvalokanam śvāsaijad-vali-
saṁvigna- nimna-nābhi-dalodaram cārv-aṅgulibhyāṁ pāṇibhyām unnīya caraṇāmbujam
mukhe nidhāya viprendro dhayantaṁ vīkṣya vismitaḥ*

अर्थ: महान् मरकत-सा श्याम, सुन्दर कमल-सा मुख, शंख-सी ग्रीवा तथा विशाल वक्ष, सुडौल नासिका तथा सुन्दर भौंहें, श्वास से हिलती अलकें, सुन्दर शंख-से कान अनार के पुष्पों से सजे, मूँगे-से अधर तथा अमृत-सी अरुण मुस्कान, कमल-गर्भ-सी अरुण कोरों वाले नेत्र तथा हृदयहारी दृष्टि, श्वास से काँपती सलवटों के ऊपर गहरी नाभि तथा पीपल-पत्र-सा उदर — वह शिशु अपने सुन्दर-अँगुलियों वाले हाथों से अपने चरणकमल को उठाकर मुख में रखकर चूस रहा था, और विप्रश्रेष्ठ विस्मय से देखते रह गए। (स्कन्ध 12, अध्याय 9, श्लोक 22-25)

शिशु के दर्शन से ऋषि की थकान विलीन हो गई; उनके हृदय तथा नेत्रों के कमल हर्ष से खिल उठे, और वे विस्मय से भरे, प्रश्न करने के लिए निकट आए। तब, शिशु के श्वास के साथ खिंचे मच्छर-से, मार्कण्डेय शिशु की देह में प्रवेश कर गए — और वहाँ, भीतर, उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को ठीक वैसे ही व्यवस्थित देखा जैसा वह प्रलय से पूर्व था।

तावच्छिशोर्वै श्वसितेन भार्गवः

सोऽन्तः शरीरं मशको यथाविशत् ।

तत्राप्यदो न्यस्तमचष्ट कृत्स्नशो

यथा पुरामुह्यदतीव विस्मितः ॥ २७ ॥

tāvac chiśor vai śvasitena bhārgavaḥ so 'ntaḥ śarīraṁ maśako yathāviśat tatrāpy ado nyastam acaṣṭa kṛtsnaśo yathā purāmuhyad atīva vismitaḥ

अर्थ: तब, शिशु के श्वास के साथ, भृगुवंशी मच्छर-सा उसकी देह में प्रवेश कर गए, और वहाँ भी उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को पूर्ववत् व्यवस्थित देखा — और, पूर्व की भाँति, अत्यन्त मोहित तथा विस्मित हुए। (स्कन्ध 12, अध्याय 9, श्लोक 27)



शिशु के श्वास के साथ भीतर खिंचकर, मार्कण्डेय शिशु की देह में सम्पूर्ण विश्व देखते हैं — स्वर्ग, ज्योतियाँ, पर्वत तथा सागर, और अपना ही आश्रम — ठीक पूर्ववत् व्यवस्थित (श्लोक 27)।

वहाँ उन्होंने आकाश, स्वर्ग तथा पृथ्वी, नक्षत्रों के समूह, पर्वत तथा सागर, देश तथा नदियाँ, देव तथा दैत्य, चारों वर्ण तथा आश्रम, तत्त्व तथा उनके विकार, और काल को उसके समस्त विभागों सहित देखा — सम्पूर्ण जगत् मानो सत्य हो। उन्होंने हिमालय, पुष्पभद्रा नदी, अपना ही आश्रम, तथा वहाँ निवास करते ऋषियों को भी देखा। तब, शिशु के श्वास के साथ, वे पुनः बाहर फेंक दिए गए और प्रलय के सागर में जा गिरे।

वटवृक्ष तथा पत्ते में लेटे उस शिशु को — जो अब उन्हें प्रेम के अमृत से भरी तिरछी दृष्टि तथा मुस्कान से देख रहा था — पुनः देखकर, अत्यन्त द्रवित ऋषि शिशु का आलिंगन करने बढ़े, जो भगवान् विष्णु के अतिरिक्त कोई नहीं थे और नेत्रों के द्वार से पहले ही उनके हृदय में प्रवेश कर वहाँ आसीन हो चुके थे। उसी क्षण शिशु अन्तर्धान हो गए, और उनके साथ वटवृक्ष, प्रलय-जल तथा सम्पूर्ण प्रलय क्षण-भर में विलीन हो गया। मार्कण्डेय ने स्वयं को अपने ही आश्रम में, ठीक पूर्ववत्, खड़ा पाया।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सच्चा भक्त केवल भगवान् को ही माँगता है। कोई भी वर पाने पर, मार्कण्डेय ने न धन माँगा, न मोक्ष तक, अपितु केवल भगवान् की शक्ति को समझने की याचना की — क्योंकि जिस हृदय ने भगवान् को देख लिया, उसके लिए और कुछ माँगने योग्य नहीं (श्लोक 2-6)।
2. माया भगवान् से पृथक् नहीं। प्रलय का व्याकुल सागर, अनन्त बहाव, समस्त प्रतीयमान जगत् — यह सब विष्णु की माया है, जो उन्हीं के भीतर धारित तथा प्रदर्शित है, कभी उनसे पृथक् नहीं (श्लोक 19)।
3. अनन्त ससीम में निवास करता है। सम्पूर्ण विश्व एक पत्ते पर के एक नन्हे शिशु के भीतर रहता है। भगवान् समस्त सत्ता को अनायास, सबसे छोटे तथा कोमलतम रूप में धारण करते हैं (श्लोक 22-27)।
4. भगवान् पहले ही भक्त के हृदय में प्रवेश कर चुके हैं। दर्शन के बीच भी, शिशु नेत्रों के द्वार से मार्कण्डेय में प्रवेश कर वहाँ आसीन होते हैं — यह स्मरण कि जिस भगवान् को हम बाहर खोजते हैं, वे पहले ही भीतर बसे हैं (श्लोक 31-34)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

मार्कण्डेय ने जो देखना चाहा, उसी के भीतर हममें से अधिकांश बिना पहचाने अपना जीवन बिता देते हैं। वे माया को समझना चाहते थे — वह विचित्र शक्ति जो एक ही सत्ता को सहस्र पृथक् वस्तुएँ दिखाती है, जो हमें भुला देती है कि हम कौन हैं और वस्तुतः कहाँ खड़े हैं। और भगवान् ने उत्तर व्याख्या से नहीं, अपितु अनुभव से दिया: एक अपार सागर पर भय तथा एकाकीपन के युग, जिनमें एक महान् ऋषि तक अपनी दिशा खो बैठे, रोए, डरे और भूले। भीतर से माया यही है। किन्तु अध्याय हमें वहीं नहीं छोड़ता। ठीक प्रलय के मध्य एक मुस्कुराता शिशु प्रकट होता है, और उस शिशु के भीतर सम्पूर्ण जगत् है, सुरक्षित तथा अखण्ड। भय तथा कोमलता को वही हाथ धारण करते हैं। माया तभी तक भयभीत करती है जब तक हम नहीं देखते कि यह किसकी शक्ति है। और तब सबसे कोमल प्रकाशन आता है: शिशु पहले ही नेत्रों के द्वार से मार्कण्डेय के हृदय में प्रवेश कर वहाँ आसीन हो चुके थे। जिस भगवान् को हम अनुभव के सागरों के पार खोजते हैं, वे हमारे अपने श्वास से भी निकट हैं — वे उसी क्षण भीतर आ गए जब हमने पहली बार सचमुच देखा।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज मार्कण्डेय की याचना को अपनी बना लीजिए। दिन में एक बार ठहरिए और कोमलता से देखिए कि आप कितनी पूर्णता से इस क्षणभंगुर जगत् में डूबे हैं — इसकी चिन्ताएँ, इसके सुख, “अनेक वस्तुओं” का अनवरत खिंचाव। फिर धीरे-धीरे श्वास लीजिए और स्मरण कीजिए कि यह सब भगवान् के भीतर रहता है, जैसे सम्पूर्ण विश्व पत्ते पर के शिशु के भीतर रहा; और वही भगवान् पहले ही आपके हृदय में आसीन हो चुके हैं। जगत् जो दे सके, ऐसी कोई एक वस्तु और माँगने के बजाय — ऋषि की भाँति — केवल उन्हें और स्पष्ट देखने की याचना कीजिए। अन्त में “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का एक निश्चित संख्या में जप कीजिए, प्रत्येक आवृत्ति के साथ अपना ध्यान कोमलता से भीतर की ओर, उस एक की ओर खींचते हुए जो जगत् तथा आप दोनों को धारण करते हैं।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का नवम अध्याय हमें भागवत के सर्वाधिक अविस्मरणीय दर्शनों में से एक देता है। कोई भी वर पाने पर, ऋषि मार्कण्डेय ने केवल भगवान् की माया देखने की याचना की, और भगवान् ने उन्हें उसके सम्पूर्ण अनुभव में से ले चलकर उत्तर दिया: एक प्रलय-जल जिसमें ऋषि अनगिनत युगों तक एकाकी बहे, और फिर एक वटपत्र पर देदीप्यमान शिशु-रूप में परम पुरुष के दर्शन, जिसकी देह में सम्पूर्ण विश्व धारित था। जब ऋषि शिशु का आलिंगन करने बढ़े, तब दर्शन विलीन हो गया — क्योंकि भगवान् पहले ही उनके हृदय में प्रवेश कर चुके थे। यह शौनक के पूर्व-प्रश्न का उत्तर है, और हम सबके लिए एक शिक्षा: जो जगत् हमें अभिभूत करता है वह भगवान् की अपनी शक्ति है, उन्हीं में सुरक्षित धारित, और जिसे हम इतनी दूर खोजते हैं वह पहले ही हमारे अपने हृदय में आसीन है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, नवम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-9-markandeya-bhagavan-ki-maya-darshan-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

